RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 September 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd September 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : पांचवां
सितम्बर : 2019

5 आ सजणा चल

अमृतवेला 6

7 साधु-सन्तों का देश

आश्रमों को कैसे बनाएं रखें 17

23 प्रार्थना (सवाल-जवाब)

धन्य अजायब 34

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी**
सहयोग : **सुखपाल कौर मेहता**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 210 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

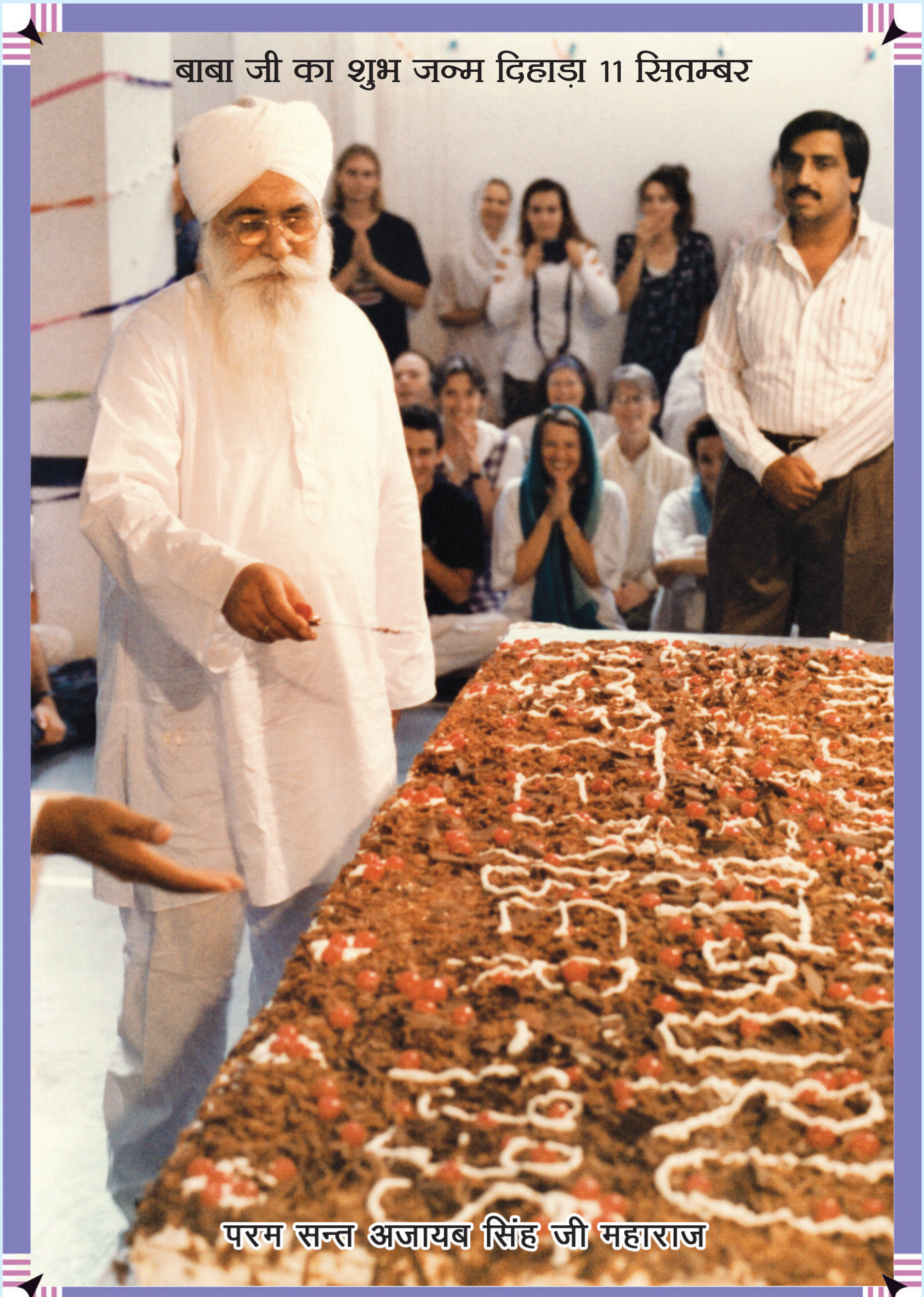

बाबा जी का शुभ जन्म दिहाड़ा 11 सितम्बर

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आ सजणा चल, शगन मनाईए

प्यारे बाबा जी,

आज आपके बच्चे आपका शुभ जन्म दिहाड़ा मना रहे हैं। हम सब आपको लख–लख बधाईयां देते हैं। हम आपके चरणों में अरदास करते हैं कि आप हमारी भूलें बख्शें और हम पर अपनी दया–मेहर करें।

आ सजणा चल, शगन मनाईए, (2)
रलके मनाईऐ सारे, हसिऐ ते गाईए, आ सजणा .....

1. जन्म दिहाड़ा, अजायब सोहणे सजण दा,
भागां नाल आया दिन, साडे हसण दा, (2)
खुशियां च सारे कैहंदे, जश्न मनाईए, आ सजणा .....

2. जन्म दिहाड़ा तेरे, नाल सोहणा लगदा,
देखो नीं सईयो मेरा, सोहणा गुरु फब्बदा , (2)
सारे रल मिल अज, खुशियां मनाईए, आ सजणा .....

3. सामने तू बैठा प्यारे, बहुत सोहणा लगदा,
तेरे बगैर जीणा, चंगा नहियों लगदा, (2)
सारे असी चाहिए दिन, ऐदां ही मनाईए, आ सजणा .....

4. गुरु कृपाल बड़ा, खुश अज लगदा,
माता–पिता नूं दिन, शोभा दिंदा लगदा, (2)
वंडदा रहे दया कोई, बाकी न बचाईए, आ सजणा .....

5. अजायब 'गुरमेल' ऐस, लायक ता नी लगदा,
जीव निमाणा वस, ओहदे वी नी लगदा, (2)
मन सजणा ओहदी, जिंदगी बणाईए, आ सजणा .....

अमृतवेला

सब सन्त इस बात पर जोर देते गए हैं कि परमात्मा आपके अंदर है, बाहर की आँखें उस परमात्मा को नहीं देख सकतीं अगर हमारे दिल में सच्ची तड़प और सच्चा प्यार है तो हमें चाहिए कि हम आँखें बंद करके अपने अंदर ही परमात्मा को ढूंढें।

अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें। प्रेम–प्यार से काम करें तो परमात्मा जरूर खुश होता है। यह हमारी एक घंटे की बैठक है। हम यहाँ भजन–अभ्यास के लिए इकट्ठे हुए हैं सबने प्रेम–प्यार से भजन–अभ्यास करना है।

हमें बाहर की किसी भी आवाज की तरफ तवज्जो नहीं देनी चाहिए क्योंकि हर आदमी अपने–अपने काम में मस्त है। हम भी अपना काम दिल लगाकर करें।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

साधु–सन्तों का देश

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी DVD-508(3) 77 आर.बी. आश्रम राजस्थान

पंच सबद तह पूरन नाद।। अनहद बाजे अचरज विसमाद।।

यह बानी श्री अर्जुनदेव जी महाराज की है। आप कहते हैं कि चाहे हिन्दु है चाहे सिख है चाहे मुस्लमान है चाहे ईसाई है, इंसान किसी भी जाति का है हर एक के अंदर पाँच 'शब्द' बज रहे हैं। सच्चखंड से तो एक ही 'शब्द' उठता है लेकिन उसे पाँच शब्द कहकर इसलिए बयान किया गया है क्योंकि यह शब्द पाँचों मंज़िलों से होकर गुज़रता है।

जब पानी दरिया से निकलता है तो उसकी और आवाज होती है जब वही पानी पत्थरों से टकराता है तो उसकी आवाज और हो जाती है। वही पानी जब साफ जमीन पर आता है तो आवाज कुछ और ही हो जाती है। वही पानी जब समुद्र में जाकर मिलता है तो पानी में पानी मिलकर उसकी आवाज बदल जाती है। उसी तरह वह 'शब्द' तो एक ही है और सच्चखंड से उठकर वह 'शब्द' हमारी आँखों के बीच धुनकारें दे रहा है।

महात्मा ने उसे पाँच शब्द इसलिए कहकर बयान किया है क्योंकि वह पाँच मंजिलों से होकर आता है। अनहद उसे कहते हैं जिसकी कोई हद न हो; वह जन्म से लेकर इंसान की मौत तक अंदर धुनकारें दे रहा है। जब हम उस शब्द को नहीं सुन रहे होते सो जाते हैं, वह शब्द उस समय भी हमारे अंदर आवाज़ लगा रहा होता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

सुत्ती पई नभाग सब सुणे न बाँगां कोए।

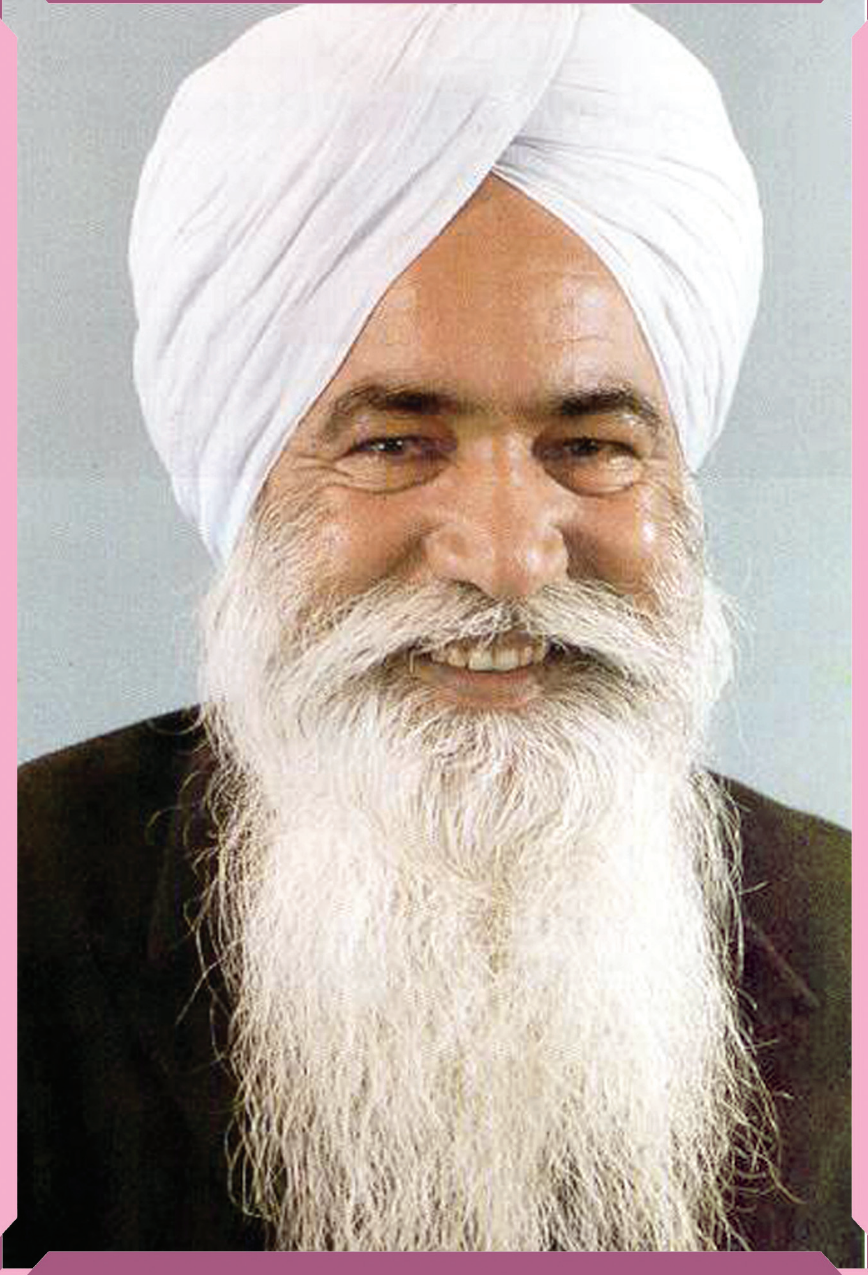

हम मन के पीछे लगकर परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं और दुनिया की तरफ जाग रहे हैं इसलिए उस परमात्मा की आवाज़ को नहीं सुन रहे।

केल करहि संत हरि लोग।। पारब्रहम पूरन निरजोग।।

हिन्दु होकर अंदर जाएं या सिख, ईसाई होकर अंदर जाएं औरत या मर्द जो भी सच्चखंड पहुँच जाता है वह सन्त कहलाता है। हमारी आत्मा पर सबसे पहले स्थूल पर्दा है उसके अंदर सूक्ष्म पर्दा है। जब हम सूक्ष्म पर्दे से ऊपर उठते हैं, कारण पर्दे को उतार लेते हैं तब हमारी आत्मा तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँच जाती है। वहाँ पहुँचकर आत्मा का नूर बारह सूरज जितना हो जाता है, वहाँ आत्मा को साधगति प्राप्त हो जाती है। दसवें द्वार में पहुँचकर आत्मा को पता चलता है कि मैं परमात्मा की अंश हूँ। हम जब तक नीचे के मंडलों में हैं तब तक हमें यह भरोसा नहीं कि वाकई हम परमात्मा की अंश हैं और वह परमात्मा हमारा पिता है।

सतसंगी का मिलना बड़ा मुश्किल है और साधु का मिलना तो बहुत ही मुश्किल है। हम कह लेते हैं कि हम सतसंगी हैं लेकिन हमें अपने अंदर झाँककर देखना है कि हम किसके सतसंगी है? जो सत को अपने अंदर प्रकट कर लेता है हमेशा शब्द-नाम के साथ जुड़ा रहता है वह सतसंगी है। हम किसके सतसंगी हैं? हम मन के सतसंगी हैं या नींद के सतसंगी हैं। हम किस चीज़ के साथ प्यार करते हैं? हम जिसके साथ प्यार करते हैं उसी के सतसंगी है।

साधगति प्राप्त करना बहुत मुश्किल है, बहुत मेहनत करनी पड़ती है, मन के साथ संघर्ष करना पड़ता है। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बतावे साध को साध कहे गुरु पूज। अरस परस के मेल से भई अगम की सूझ।।

सूख सहज आनंद भवन।। साध संगि बैसी गुण गावहि।।

अब अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''वह सुख और शांति का देश है, वह **साधु-सन्तों का देश** है। वहाँ पहुँचकर सभी सन्तों का आपस में प्यार होता है वे सभी सहेलियां हैं।''

तह रोग सोग नहीं जनम मरन।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''वहाँ पर यह स्थूल शरीर नहीं है। रोग-सोग इस स्थूल शरीर को हैं। मौत-पैदाइश यहाँ स्थूल शरीर को ही है; आत्मा न तो जन्म लेती है और न ही मरती है।'' कबीर साहब कहते हैं

सुरत समानी शब्द में ताँको काल न खाए।।

जहाँ रोग-सोग नहीं, मौत-पैदाइश नहीं सन्त उस देश से आकर हमें संदेश देते हैं, ''आओ! हम आपको **साधु-सन्तों के देश** ले चलें जहाँ आनंद ही आनंद है और खुशियाँ ही खुशियाँ हैं।''

ऊहा सिमरहि केवल नामु।। बिरले पावहि ओहु बिस्राम।।

अब शिष्य सवाल करता है, ''वहाँ की आत्माओं का भोजन क्या है, वे किसके आसरे रहती हैं और वहाँ पहुँची हुई आत्माएं क्या काम करती हैं?'' गुरु साहब जवाब देते हैं, ''वहाँ की आत्माओं का भोजन प्रेम और इश्क है। सब आत्माओं को शब्द का आधार है। ये आत्माएं शब्द-नाम की कमाई करती हैं, शब्द के साथ जुड़ी रहती हैं। वहाँ पहुँची हुई आत्माओं का आपस में प्रेम होता है।''

मिल सईयां मंगल गावही गीत गोबिंद अलाहे।
हर जेहा कोई न दिस्सी दूजा लवा न लाहे।।

हिन्दुस्तान में रिवाज है कि जब किसी लड़की की शादी होती है वह ससुराल जाती है तो वहाँ औरतें उसे डोली से उतारने के लिए आती हैं और उसके सुहाग के गीत गाती हैं। वे औरतें कहती हैं कि तेरा बंदा बहुत अच्छा है, बहुत नेक आदमी है।

इसी तरह मातलोक से कमाई करके पहले पहुँची हुई आत्माएं उसे लेने के लिए आती हैं। वे आत्माएं उससे कहती हैं, ''तेरा पति

परमात्मा बहुत सुन्दर है यह तेरा आगा-पीछा ढक लेगा, यह तेरा था इसलिए तुझे लेने गया, तू इसकी अंश है। यह सच्चखंड का मालिक है यही कुल मालिक है। तू भाग्यशाली है कि मातलोक के विषयों-विकारों से निकलकर यहाँ आ गई है।''

जो आत्माएँ पहले से सच्चखंड पहुँची होती हैं वे मातलोक से आने वाली आत्मा का स्वागत करती हैं और पूछती हैं, ''तू हमें बता कि मातलोक से क्या कमाकर लाई है?'' वहाँ पहुँचकर यह आत्मा जवाब देती है, ''कोयलों की दलाली से क्या लाना था।'' बुल्लेशाह कहते हैं:

बुल्ला रंगमहली जा चढ़या लोग पुछण आए खैर।
असी ऐह कुछ जग चों खट्टया मुँह काला नीले पैर।।

वहाँ आत्माएं नाम के आधार पर रहती हैं। बहुत ही विरली आत्माएं वहाँ पहुँचकर आराम कर पाती हैं।

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।
जग में ऊतम कडिए विरले केई के।।

नारद ने कृष्ण से कहा, ''आपके स्वर्ग-बैकुंठ में बहुत जगह है। दुनिया बहुत दुखी है अगर आप थोड़ी सी जगह दे दें तो बहुत अच्छा होगा।'' कृष्ण ने नारद से कहा, ''नारद जी! आप जिन-जिन को ले आएंगे मैं उन्हें स्वर्ग में जगह दे दूंगा।''

नारद बहुत प्रसन्न हुए। नारद ने कई लोगों से पूछा आप स्वर्ग जाने के लिए तैयार हैं? लेकिन कोई तैयार नहीं हुआ। आखिर नारद ने सोचा! सूअर की योनि बहुत दुखदाई है, यह स्वर्ग जाने के लिए तैयार हो जाएगा। नारद ने सूअर से पूछा, ''क्या तुम्हें स्वर्गों में जाना है?'' सूअर ने नारद से पूछा, ''क्या वहाँ पर गंदे पदार्थ और बाल-बच्चे हैं?'' नारद ने कहा, ''स्वर्गों में इन सबका क्या

काम?'' सूअर ने कहा, ''मैं इतना भी पागल नहीं कि तेरे झाँसे में आ जाऊँ।'' वह नारद को मारने के लिए दौड़ा।

नारद उदास होकर स्वर्गलोक में पहुँचा। कृष्ण ने पूछा, ''नारद जी! आप किसी को अपने साथ लेकर नहीं आए?'' नारद ने कहा, ''क्या बताऊँ! दुनिया बहुत दुखी है। कोई बीमारी की वजह से दुखी है, कोई बेरोजगारी और कोई औलाद न होने की वजह से दुखी है तो कोई औलाद के नालायक निकल जाने से दुखी है लेकिन आपके स्वर्गों में आने के लिए कोई भी तैयार नहीं।''

सन्त हमें लेने के लिए आते हैं। परमात्मा ने सन्तों को खुली छूट दी होती है कि आप जितनों को भी लेकर आएँगे मैं उन्हें अपने पास जगह दूँगा। चाहे सन्त हमें जबरदस्ती ले जाना चाहें हम फिर भी जाने के लिए तैयार नहीं होते।

भोजनु भाउ कीरतन आधारु।। निहचल आसनु बे समारु।।

परमात्मा का आसन अडोल है कभी नहीं डोलता। वहाँ हर आत्मा नाम के आसरे रह रही है।

डिगि न डोलै कतहू न धावै।। गुरु प्रसादि को इहु महलु पावै।।

परमात्मा का सिंहासन अडोल है। जो आत्माएं वहाँ पहुँच जाती हैं जिन्हें सतगुरु की कृपा से गुरमुख साधगति मिल जाती है वे भी अडोल हो जाती हैं। चाहे दुनिया उन्हें कितने भी कष्ट दे, चाहे कोई उनकी निन्दा-चुगली करे, वे डोलते नहीं। वे परमात्मा की भक्ति को नहीं छोड़ते कभी अपने रास्ते से नहीं भटकते।

भ्रम भै मोह न माइआ जाल।। सुंन समाधि प्रभु किरपाल।।

वहाँ पर पहुँची हुई आत्माओं का कोई धर्म नहीं होता, उन पर माया का जाल असर नहीं करता। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज

कहते हैं, ''जिन पर सतगुरु दयाल हो जाते हैं उनको यह गति प्राप्त हो जाती है।'' हम अपने आप इस गति को प्राप्त नहीं कर सकते। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से, खींचे सुरत गुरु बलवान।।

ताका अंतु न पारावारु।। आपे गुपतु आपे पासारु।।

जैसे हम परमात्मा का अंत नहीं पा सकते कि उसका पारावार और उसकी ताकत कितनी है, इसी तरह हम सतगुरु का पारावार नहीं पा सकते। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

तू सुल्तान कहां हो मियां तेरी कवन वडयाई।।

अगर हम उसको अच्छा इंसान, बादशाह, सुल्तान भी कह दें फिर भी हमने उसकी कौन सी बड़ाई या महिमा गा दी; यह भी दुनियादारी का एक बड़ा लफ्ज़ है।

जाकै अंतरि हरि हरि सुआदु।। कहनु न जाई नानक बिसमादु।।

जैसे कोई गूंगा आदमी मिठाई खा रहा हो, हम उससे मिठाई के स्वाद के बारे में पूछें तो वह बयान नहीं कर सकता वह सिर्फ सिर ही हिला सकता है। हमें उसके चेहरे से पता लगेगा कि इसे अच्छा स्वाद आया है लेकिन गूंगा आदमी बयान नहीं कर सकता।

कुछ महीने पहले की बात है कि हमारे इलाके का एक अकाली आया वह बोला, ''मैं आपसे वायदा करता हूँ कि मैं नाम के बारे में किसी को नहीं बताऊँगा आप मुझे अकेले को ही नाम दे दें। वह नाम कैसा है?'' मैंने हँसकर कहा, ''सन्त नाम को मन में बसा देते हैं, इसका स्वाद बताने वाला नहीं और न ही तुम किसी को बता सकोगे। जो अंदर जाते हैं वे ही इसका स्वाद जानते हैं, यह

बयान करने वाला नहीं है। जो भी **साधु-सन्तों के देश** में पहुँच गया वह वहाँ जाकर चुप हो गया क्योंकि वह चुप का देश है।''

यह दुनिया क्या समझेगी कि वह कैसा देश है? अगर इनको पता होता कि सन्त ऐसे देश से हमारे ऊपर रहमत करने के लिए आते हैं तो दुनिया उन्हें सूली पर न चढ़ाती। जिस महात्मा की यह बानी है उन्हें गर्म तवे पर बिठाया गया, उनके सिर में गर्म रेत डाली गई, उन्हें उबलते हुए पानी में बिठाया गया। अगर दुनिया इस स्वाद को समझने की कोशिश करती तो क्या हम महात्मा के साथ ऐसा सलूक करते बल्कि हम तो महात्मा से फायदा उठाते।

हमें चाहिए हम मेहनत करें अभ्यास करें। मेहनत के बिना कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। रहमत करने वाला सतगुरु तो आ गया है हम उसकी रहमत से फायदा उठाएं और अपनी आत्मा पर रहम खाकर अपने निज घर सच्चखंड पहुँचें।

मैं आपको अपने गुरुदेव की रहमत की एक कहानी सुनाता हूँ जो मेरे तजुर्बे में आई यह एक चश्मदीद वाक्या है। एक बार जब हुजूर नामदान देने लगे तो एक मुसलमान ने नामदान के बाद मुझसे पूछा, ''क्या अंत समय में गुरु सचमुच आता है और सेवक की संभाल करता है?'' मैंने उससे कहा, ''महाराज जी! पास ही खड़े हैं, मैं तुझे पुछवा देता हूँ।''

मैंने महाराज जी को बताया कि ये आदमी यह सब पूछ रहा है। हुजूर ने हँसकर उससे कहा, ''तुम मेरे कपड़े देख लो मैं इन्हीं कपड़ों में तुम्हें लेने के लिए आऊँगा। तेरा अंत समय तेरे घोड़े के हाथों ही होगा।'' उस मुसलमान ने घोड़ा रखा हुआ था। दो साल बाद हमेशा की तरह वह घोड़े को नहलाकर ला रहा था, घोड़ा उससे छूटकर भागने लगा लेकिन उसने घोड़े को नहीं छोड़ा। घोड़े

ने अपने दोनों पिछले पैर उसकी छाती पर मारे वह नीचे गिर गया और उसे साँस नहीं आया।

जैसा हुजूर ने कहा था कि तुम अपने घोड़े के हाथों मारे जाओगे ठीक उसी तरह हुआ। वह अपने ही घोड़े द्वारा इस संसार को छोड़कर चला गया। आप सोचकर देखें! सेवक को क्या पता है कि उसने संसार में कितनी यात्रा करनी है? यह सन्तों की ही रहमत है जो वे यह कह देते हैं कि तुम मेरे कपड़े देख लेना जब मैं तुम्हें लेने आऊँगा मैंने यही कपड़े पहने होंगे।

वह जब कभी मुझसे मिलता तो यही कहता था कि हुजूर मुझे उन्हीं कपड़ों में दर्शन देते हैं। सन्त-महात्मा हम पर रहमत करने आते हैं। यह पूरे गुरु का ही काम है जो सेवक को इस तरह के दिलासे दे देता है कि मैं तुम्हें इन्हीं कपड़ों में लेने आऊँगा, बीच में छोड़कर नहीं जाऊँगा। तुम्हारा काम मैं जो कहता हूँ वह करना है।

2 फरवरी 1981

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

आश्रमों को कैसे बनाए रखें

22 फरवरी,1963

1. आश्रम, जैसा कि यह शब्द सूचित करता है कि इसका मतलब यह एक आश्रय की जगह है। एक आध्यात्मिक शरण स्थान जिसे उस गुरु पावर ने आध्यात्मिकता के अभिलाषियों के लाभ के लिए अपने प्यार भरे जीवन दान की किरणें फैलाने के लिए चुना है। आश्रम वह जगह है जहाँ आध्यात्मिकता की बढ़ोतरी के लिए भूखी आत्माएँ एकत्रित होती हैं।

यह पवित्र अहाता सही किस्म के वातावरण में संचित आध्यात्मिक बढ़ोतरी के लिए सहायक है। यह जरुरी है कि जो लोग इस दया भरी जगह में दाखिल हों वे अपनी सारी घरेलू चिंताएँ, परेशानियाँ और संसार के सभी ख्याल व ख्वाहिशें छोड़कर यहाँ आएँ ताकि वे ऊपर से आती हुई पवित्र धुन से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकें। वे जब तक आश्रम में हैं मन, वचन और कर्म से ऐसा कुछ भी न करें जो इस स्थान की पवित्रता का उल्लंघन करे और उनकी तरक्की को रोके।

2. पवित्र स्थान आश्रमों को परमात्मा की भक्ति के लिए चुना गया है। हमें ऐसे स्थानों को सामाजिक या सांस्कृतिक मेलजोल का केंद्र नहीं समझना चाहिए। आश्रम गुरु के पवित्र कार्य के लिए चुनी हुई सुरक्षित जगह है लेकिन यहाँ आकर लोग बेकार की चुगली और अनुपयुक्त गतिविधियों के लिए जमा होते हैं। हमें इस जगह की पवित्रता को बनाएँ रखने के लिए प्रयत्न करना चाहिए इसलिए यह बहुत जरुरी है कि सभी नामलेवा और दूसरे लोग जो आश्रम

में आते हैं वे सयंम का पालन करें। आदर-सत्कार, नम्रता व प्यार भरी दया से सबकी सेवा करने की कोशिश करें ताकि वे ग्रहणशीलता के उपयुक्त साधन बन सकें।

3. आश्रम में आपका स्वागत करने के लिए या रीति-रिवाजों में आपकी मदद के लिए कोई पुरोहित नहीं है। यहाँ केवल दयाल गुरु पावर का आगे बढ़ा हुआ रहनुमाई वाला हाथ है जो प्यार भरी दया और रहम से अंतरी मार्ग में मुनासिब मदद और मार्गदर्शन के लिए सदैव तैयार है। इसके लिए शांत वातावरण, मन की धैर्यता की जरूरत है। सभी से उम्मीद की जाती है कि वे शांत मन, सौहार्दपूर्ण वातावरण और धैर्य को धारण करेंगे। गहरी चुप्पी और घनी हरियाली वाले वातावरण में आपको गुरु पावर के सफेद प्रकाश का आशिर्वाद मिलेगा। संचित वातावरण के जरिए आती हुई सम्पन्न खुशबूदार हवा जीवनधारा की दिव्य धुनों को आपके आगे प्रकट करेगी। आश्रम में आना आपकी आत्मा को हिला देने वाली दिव्य तरंगों के अनुभव का आर्शिवाद प्रदान करेगा।

4. जैसा की पहले कहा गया है, इन आश्रमों के भीतर के वातावरण को राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र की चर्चा से मुक्त होना चाहिए। यह जगह केवल दयालु गुरु की पवित्र शिक्षाओं और पहले आए सन्त-महात्माओं के आध्यात्मिक ग्रंथों पर विचार करने के लिए है। आश्रम में सुबह-शाम आध्यात्मिकता के प्रवचन और नियमित भजन अभ्यास होना चाहिए। ऐसी सभाओं में गुरु पावर अपनी गहरी अवस्था तक जाकर हिलोरे मारती है और हम जबरदस्त आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

5. जैसा आप जानते हैं कि प्रकृति की नियामतें जैसे हवा, पानी, सूर्य की रोशनी वगैरह की तरह पवित्र नाम की दिव्य नियामत

भी मुफ्त में व भरपूर मात्रा में दी जाती है। यहाँ का तरीका यह नहीं है कि किसी भी आगंतुक, आकस्मिक जिज्ञासु या औरों से कोई भी दान स्वीकार किया जाए। आश्रमों के सारे खर्च सिर्फ नामलेवाओं से उनकी अपनी मर्जी से दिए गए अंशदान द्वारा ही पूरे किए जाने चाहिए।

6. निःस्वार्थ सेवा रूहानी तरक्की के लिए आत्मा को साफ करने वाला एक महान साधन है। जिन लोगों को आश्रम का रख-रखाव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिन्हें यह पवित्र कार्य दिया गया है उन्हें यह चाहिए कि वे तन, मन व धन से पूर्ण समर्पण की मिसाल कायम करें। जो त्याग से और अपने आपको कुछ भी न समझने की भावना से सेवा करता है उसे बहुत मान मिलता है और वह गुरु की खुशियाँ प्राप्त करता है।

इन पवित्र सभाओं में उपस्थित रहने वाले हर व्यक्ति को भक्तिपूर्ण नम्रता के साथ प्यार से भरा सहयोग निःस्वार्थ सेवा के लिए बराबर करना चाहिए ताकि ईश्वरीय दया के वितरण के इन स्थानों में आने वाले आम लोग यह देख सकें कि आप एक पूर्ण गुरु की संभाल और रहनुमाई में हैं।

आपको अपने हृदय में सेवाभाव रखना चाहिए यह सेवा आपको ऊँचाईयों तक ले जाती है। सेवा मुफ्त, अपनी मर्जी से व हर दिल में बसने वाले परमात्मा की प्रेमपूर्ण भक्ति की भावना से होनी चाहिए। अपने आपको इतना फैला दें जिसमें वह सब समा जाए जिसके हम अभिन्न अंग हैं क्योंकि सबकी भलाई में ही अपनी भलाई है।

7. प्रबंधन समिति के सदस्यों को यह पवित्र कार्य अपने भाईचारे की मदद के लिए सौंपा गया है। अपना पसीना बहाकर

रोजी-रोटी कमाना इसकी मुख्य बाध्यता है इसलिए सभी को ईमानदारी से अपना भरण-पोषण करने की कोशिश करनी चाहिए। बाहर से आने वालों के लिए सतसंग के पश्चात सादा पूर्ण शाकाहारी भोजन परोसने के लिए आश्रम का पैसा इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नहीं है बहरहाल उसका पूरा हिसाब-किताब रखा जाना चाहिए।

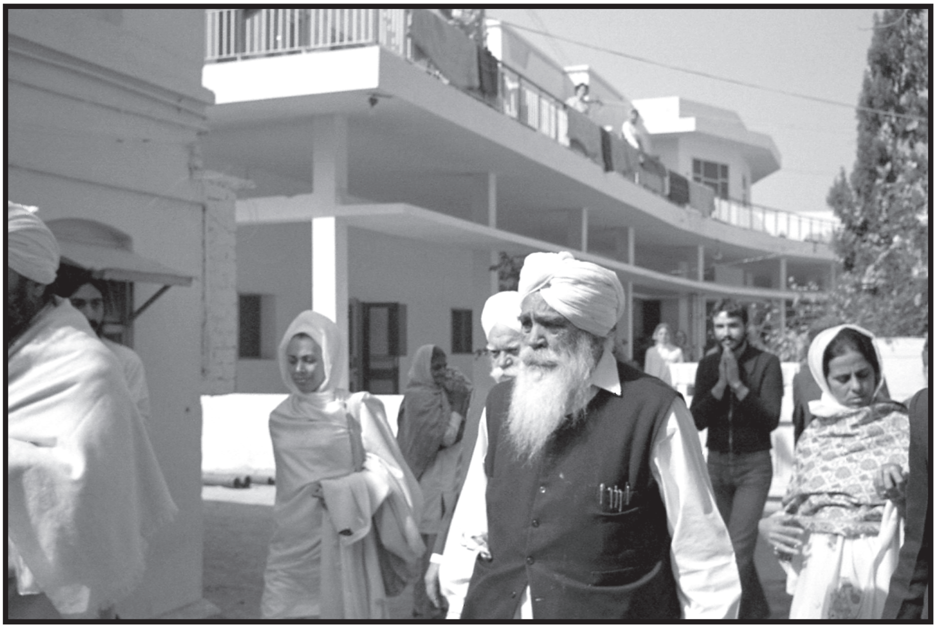

8. आश्रम में एक छोटा सा पुस्तकालय होना चाहिए जिसमें समय-समय पर छपने वाला साहित्य, सन्तमत या गुरु ने जो सुझाव दिए हों ऐसी पुस्तकें होनी चाहिए। उन पुस्तकों में गुरु के जीवन के आदर्श होने चाहिए क्योंकि वह गुरु की दया से संचित हैं और आध्यात्मिकता के सच्चे अर्थ को समझने में प्रेमियों की मदद करेंगी।

9. समानता, भाईचारा और स्वतंत्रता आध्यात्मिकता की आधारशिलाएँ हैं। इस पवित्र आश्रम में दाखिल होने वाले सभी

प्रेमियों को अपने जीवन के रुतबे को भूल जाना चाहिए। इंसान का भाईचारा सभी इंसानों को अपना भाई मानना और परमात्मा को सबका पिता मानने की भावना से सबका सहयोग करने में है। अमीर या अनपढ़ की कोई पहचान नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम एक ही पिता के बच्चे हैं और समानता से उस ख़ुदाई दया के हकदार हैं। परमात्मा की बादशाहत हम सबकी विरासत है और हर कोई उस खोई हुई बादशाहत का हकदार है।

10. मुद्दों पर हुए मतभेदों को नम्रता और प्यार से आपस में विचार-विमर्श करके सुलझा लेना चाहिए। अगर कोई पेचीदा मसला है तो स्पष्टिकरण के लिए गुरु के सम्मुख पेश किया जाना चाहिए। प्यार से सहन करना इसका पथ प्रदर्शक सिद्धांत होना चाहिए। ऐसा कौन है जो गलती नहीं करता?

11. हर व्यक्ति को अपने दिल की तह में यह लिख लेना चाहिए कि गुरु की वह अनदेखी आँख लगातार अपने बच्चों की आध्यात्मिक रुचि को देख रही है। आश्रम की पवित्रता बनाए रखने के लिए आपके प्रयत्न गुरु की हर समय बढ़ती हुई दया को प्राप्त करने में आपकी मदद करेंगे। इन पवित्र स्थानों के बाहर की गई भूल-चूक को माफ किया जा सकता है लेकिन ईश्वरीय दया के वितरण स्थान में आपके व्यक्तिगत व्यवहारों में की गई चूक को पाप माना जाता है और संभवतः माफ नहीं किया जा सकता क्योंकि वह इस जगह की पवित्रता को खंडित करती है।

अगर आप ऊपर कहे गए मूल सिद्धांतों का पालन करेंगे तो आप अवश्य ही परमात्मा की संभाल पाएँगे।

पूर्ण प्रेम सहित,

कृपाल सिंह

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

प्रार्थना

मुंबई DVD - 612 (2) 11 जनवरी 1992

एक प्रेमी :- *प्यारे महाराज जी! क्या आप हमें दूसरों के लिए* ***प्रार्थना*** *करने के बारे में बताऐंगे? अगर आपका कोई प्रेमी जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है या किसी का कोई जरूरी इम्तिहान है तो क्या आप उसके लिए अपना अभ्यास पेश कर सकते हैं?*

बाबा जी :- हाँ भई! इस सवाल का जवाब सन्तबानी मैगजीन में काफी लम्बा-चौड़ा लिखा गया है अगर आप यह जवाब वहाँ से पढ़ें तो अच्छा होगा। फिर भी मैं आपको थोड़ा सा बताऊंगा कि किसी के लिए अच्छी भावना रखना बुरी बात नहीं। सभी सन्त यही सिखाते हैं कि आप जैसा प्यार अपने साथ करते हैं वैसा ही प्यार अपने पड़ोसी के साथ भी करें। हर एक के लिए शुभकामनाएँ रखें, **प्रार्थना** करना बुरी बात नहीं लेकिन मैं आपको प्यार से यह भी बताऊँगा कि अगर हम पूर्ण हैं तो ही हमारी प्रार्थना स्वीकार होती है।

जब हमारा खुद का मन डोल रहा होता है और हम घबराए हुए होते हैं उस समय कई दफा हमारा मुँह तो प्रार्थना कर रहा होता है लेकिन मन में उसके लिए बुरी भावना होती है, ऐसी **प्रार्थना** स्वीकार नहीं होती। सबसे पहले हमें पूर्ण बनना चाहिए फिर हम दूसरों की मदद करें तो वह अच्छा है। हम कई दफा अपने लिए और दूसरों के लिए भी प्रार्थना करते हैं। जब हम अंदर नहीं जाते तो हमें पता नहीं कि हमारी यह प्रार्थना जायज है या नाजायज है? तो हम अभाव ले आते हैं।

हिन्दुस्तान के समाज का अजीब ही ख्याल होता है, पश्चिम में तो ऐसा रिवाज कम ही है। यहाँ लड़की के पैदा होने पर लोग खुश

नहीं होते जितना लड़का पैदा होने पर खुशी मनाते हैं। जब मैं पहले टूर पर अमेरिका गया वहाँ किसी प्रेमी के घर लड़की पैदा हुई। उन्होंने बड़े चाव से मुझे जानकारी दी कि हमारे घर परमात्मा की दया से लड़की पैदा हुई है। मेरे ऊपर हिन्दुस्तान के समाज का बहुत प्रभाव था। मैंने प्रिंसिपल कैंट बिकनैल से पूछा, ''अब मैं क्या बोलूँ?'' तब प्रिंसिपल ने कहा, ''यहाँ पश्चिम में कोई ऐसी बंदिश नहीं लड़का या लड़की एक ही बात है।'' तब मैंने वहाँ अपनी खुशी जाहिर की और उन्हें अपनी शुभकामनाएँ भेजी।

हिन्दुस्तान में बहुत से बाबा अपना अच्छा रोजगार चलाते हैं। जिनका यह दावा होता है कि अगर हम किसी के घर जाकर अरदास कर दें तो लड़का ही होगा।

मैं जिस गाँव में रह रहा हूँ, वहाँ एक बड़ा मशहूर बाबा था। उसने कहा कि आप मुझसे अरदास करवाएं आपके घर लड़का हो जाएगा। एक परिवार ने उस बाबा को पहली दफा बुलवाया लेकिन उनके घर लड़का पैदा नहीं हुआ तब बाबा ने कहा, ''आपने श्रद्धा नहीं बनाई इसलिए लड़का पैदा नहीं हुआ।'' मैं दोबारा आपके घर में गुरुग्रंथ साहब का अखंड पाठ करूँगा, आप लोग आरती उतारेंगे श्रद्धा बनाकर रखेंगे तो आपके घर लड़का जरुर पैदा होगा।

आखिर वह मेरे पास भी आया उसके साथ उसके काफी शिष्य भी थे। मैंने उसकी बहुत तारीफ की कि आप बहुत परोपकारी हैं लोगों को लड़के देते हैं। उसने अपनी खूब प्रशंसा की कि जिन लोगों के घर लड़का पैदा नहीं होता था मैंने बहुत लोगों के घर अपनी अरदास से लड़के पैदा किए हैं। मैंने कहा, ''हाँ जी! आप बड़े परोपकारी हैं।'' मैंने उससे कुछ नहीं कहा, अपने आपमें चुप रहा।

उस बाबा ने उनके घर जाकर काफी खर्च करवाया। हजारों आदमियों ने खड़े होकर अरदास की। जिस औरत के लिए अरदास की थी दस-बारह दिन बाद वह औरत मर गई। वे सारे लोग अभाव ले आए कि जिस बाबा को यह नहीं पता कि यह औरत मर जाएगी उसने इतना खर्च क्यों करवाया? उस आदमी ने दूसरी शादी करवा ली, आज वे मियाँ-बीवी नामलेवा हैं। आजकल वे हुजूर कृपाल के चरणों में लगे हुए हैं। हम **प्रार्थनाएँ** करते हैं जब तक हम खुद पूर्ण न हों तब तक हम अपने साथ धोखा कर रहे हैं और दूसरों के साथ भी धोखा कर रहे हैं।

सबसे बड़ी **प्रार्थना** तो यह है अगर वह सतसंगी है तो उसे सिमरन याद करवाएं, वहाँ बैठकर सिमरन करें। हम कर्मभूमि में आए हुए हैं, हमें उस परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए। दवाई-बूटी करनी चाहिए कर्म भोगने में ही फायदा है। परमात्मा कोई छोटा बच्चा नहीं कि हम उसे समझाएं, वह हमारे बोलने से पहले ही हमारी **प्रार्थना** को समझता है।

मैं बताया करता हूँ कि हम घर में भूल-चूक से ही अभ्यास करते हैं लेकिन **प्रार्थना** करते हुए एक घंटा लगा देते हैं कि आप हमारा यह काम करें वह काम करें। लड़के को ठीक करें, लड़की को ठीक करें। हमारा कोई मुकदमा है तो उसमें जीत दिलवाएं। हम गुरु के आगे अनेकों किस्म की समस्याएं पेश करते हैं लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि इन ख्वाहिशों के लिए हमें हमारा मन प्रेरित करता है।

हम मन को बड़ा समझते हैं। हम मन के कहने पर गुरु को समझाना चाहते हैं कि आप हमारा कहना मानें हमारे कहे मुताबिक चलें। हम गुरु की भक्ति करते हैं या मन की भक्ति करते हैं?

सन्तमत का तो यही उसूल है कि हमें उस प्रभु का भाणां मानना चाहिए। जो कुछ प्रभु ने हमारी प्रालब्ध में लिख दिया है उसे भोगने में ही हमारा फायदा है। सन्तमत में हमें ज्यादा से ज्यादा भाणां मानना और उद्यम करना ही सिखाया जाता है।

हम परमात्मा रूप महाराज सावन सिंह जी की जिंदगी का वाक्या सुनते हैं कि उनका बत्तीस साल का लड़का ओवरसियर था वह बीमार पड़ गया। महाराज सावन सिंह जी के दिल में ख्याल आया अगर मैं इसे वापिस डेरा ब्यास ले गया तो बीबी रूक्को (जो पहले बाबा जयमल की सेवा में रहती थी) मजबूर करेगी कि आप इस लड़के को संसार में रखें। यह कष्ट सहना बहुत ही मुश्किल होगा। आपने कहा कि मैंने इस बात को सोचकर उसका आखिरी श्वांस स्टेशन पर ही पूरा करवाया। उस वक्त मैंने अपने दिल में

झाँककर देखा कि मेरे दिल में न कोई गमी थी न कोई खुशी थी। यह बाबा जयमल सिंह जी की दया थी उनका ही भाणा था।

प्यारेयो! गुरुमुख भाणे में रहते हैं। हमें भी उनकी शिक्षा पर अमल करना चाहिए, परमात्मा का भाणा मानना चाहिए। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

तेरा भाणा मीठा लागे, नाम पदार्थ नानक माँगे।

हमें अपने दिल में झाँककर देखना चाहिए कि बत्तीस साल का जवान लड़का ओवरसिअर हो, यह कितना मुश्किल है लेकिन उस महान गुरुदेव ने नमूने की जिंदगी पेश की। सन्त हमेशा ही एक नमूने की जिंदगी व्यतीत करते हैं।

सन्त परमात्मा से बड़े नहीं होते। उन्होंने प्यार से परमात्मा को अपने वश में किया होता है वे परमात्मा का भाणां मान लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी को **प्रार्थना** करने की जरुरत नहीं थी सिर्फ ख्याल करने की ही जरुरत थी, उस बच्चे की जिन्दगी बच सकती थी। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

जो बोले पूरा सतगुरु सो परमेश्वर सुणया।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सन्त सेवक की इस तरह की प्रार्थनाएं सुनने लगें तो वे सेवक को करोड़ों सालों में भी संसार से लेकर नहीं जा सकते।'' सन्त जिस मिशन को लेकर संसार में आते हैं वे वही करते हैं।

मैं आमतौर पर सतसंग में आपको महाराज सावन सिंह जी की मिसाल सुनाया करता हूँ कि एक घुड़सवार अपने घोड़े को पानी पिलाने के लिए कुएं पर गया। जमींदार ने कुएँ से पानी निकालने के लिए हल जोड़ रखा था। घोड़ा जब पानी पीने के लिए आगे जाता

VERSACE

तो आवाज से डरकर वापिस आ जाता। घुड़सवार ने जमींदार से कहा कि तू अपने हल को थोड़ा सा रोक दे। जमींदार ने जब हल रोका तो पानी भी रूक गया। जमींदार इस राज से वाकिफ था। उसने कहा, ''देख प्यारेया! पानी तो इसे चीं-चीं में ही पीना पड़ेगा।''

इसलिए सतसंगी को ऐसे मौकों पर जब कोई घटना घटती है तो अपने दिल को हमेशा गुरु के चरणों में रखना चाहिए। अगर हम अपना मुँह गुरु की तरफ करेंगे तो वह जरुर हमारी आत्मा को ताकत देंगे और हमारी मदद भी करेंगे। गुरु का भाणा मानने में ही फायदा होता है। भक्त नामदेव जी कहते हैं:

आपन किया कछु न होए, करहे राम होय सो होय ।।

सतसंगी को सदा ही अभ्यास करके पूर्ण होना चाहिए फिर अपने आप ही समझ आ जाती है कि मैंने कौन सी प्रार्थना करनी है और कौन सी **प्रार्थना** नहीं करनी। अभ्यास करने से हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा हो जाती है, सच और झूठ का निर्णय हो जाता है।

प्यारेयो! मेरे कहने का भाव यह नहीं है कि प्रार्थना करना बुरा है। आप बड़े शौक से **प्रार्थना** कर सकते हैं लेकिन अंदर से परमात्मा हाँ या ना में जो जवाब दे रहा है उसे भी सुनें कि उसने आपकी प्रार्थना का क्या जवाब दिया है? परमात्मा आपकी प्रार्थना सुनता जरुर है इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं। वह जवाब भी देता है लेकिन हम बाहर बैठे हैं वह अंदर जवाब दे रहा है।

आप अंदर जाकर उसका जवाब सुनें फिर आपको यकीन आ जाएगा कि हमारी **प्रार्थना** में क्या कमी है और उसने क्या जवाब दिया है? जब सतसंगी अंदर जाता है तब उसे पता लग जाता है कि मैंने क्या मांगना है? मैं जो कुछ मांग रहा हूँ उसके पीछे कितना

दुख या कितना सुख है? सच्चाई तो यह है कि सन्तमत के अंदर गुरु हमें सिर्फ आँखें बंद करके बैठना ही नहीं सिखाते बल्कि अंदर बात करना भी सिखाते हैं। अंदर बाहर से साफ होता है, अंदर की किताब पढ़ें तो बाहर की किताब भी साफ पढ़ी जाएगी।

प्यारेयो! उतनी देर रोने का मजा नहीं आता जब तक आँखें पोंछने वाला पास न हो। प्रार्थना करने का उस वक्त ही मजा आता है जब सुनने वाला भी सामने तैयार हो। प्रभु तो सुनने के लिए तैयार है वह हमारी साँस-साँस की बात को सुनता है, वह हमारी हर हरकत को देखता है लेकिन हम परमात्मा की बातें सुन नहीं रहे और न ही सुनने को तैयार होते हैं।

प्यारयो! हमें अपने सज्जनों, मित्रों के साथ हमदर्दी करनी चाहिए प्यार करना चाहिए उनकी देखभाल करनी चाहिए लेकिन जहाँ तक प्रार्थना का संबंध है वह मैंने आपको खोलकर सुना दिया हैं। सबसे पहले हमें **प्रार्थना** करने लायक बनना चाहिए और उस प्रभु के जवाब को सुनने वाला भी बनना चाहिए।

मैंने अमेरिका से वापिस आते समय अपने संदेश में कहा था किसी सन्त के लिए सेवक की भाषा बोल लेनी मुश्किल नहीं लेकिन वे मालिक के भाणे में रहते हैं। जहाँ आत्मा की शब्द-परमात्मा के साथ बात होती है वहाँ किसी भाषा का मसला नहीं होता, उसी भाषा में बात होती है।

प्यारेयो! अंदर जाकर पप्पू ट्रांसलेटर की जरुरत नहीं होती। आपके सैंकड़ो-हजारों भाई इस बात के गवाह हैं कि हमारे साथ अंदर हमारी भाषा में बात होती है। मैं आपको सादे लफ्ज़ों में समझा रहा हूँ कि यह करनी का मत है बुद्धि विचार का मत नहीं।

***

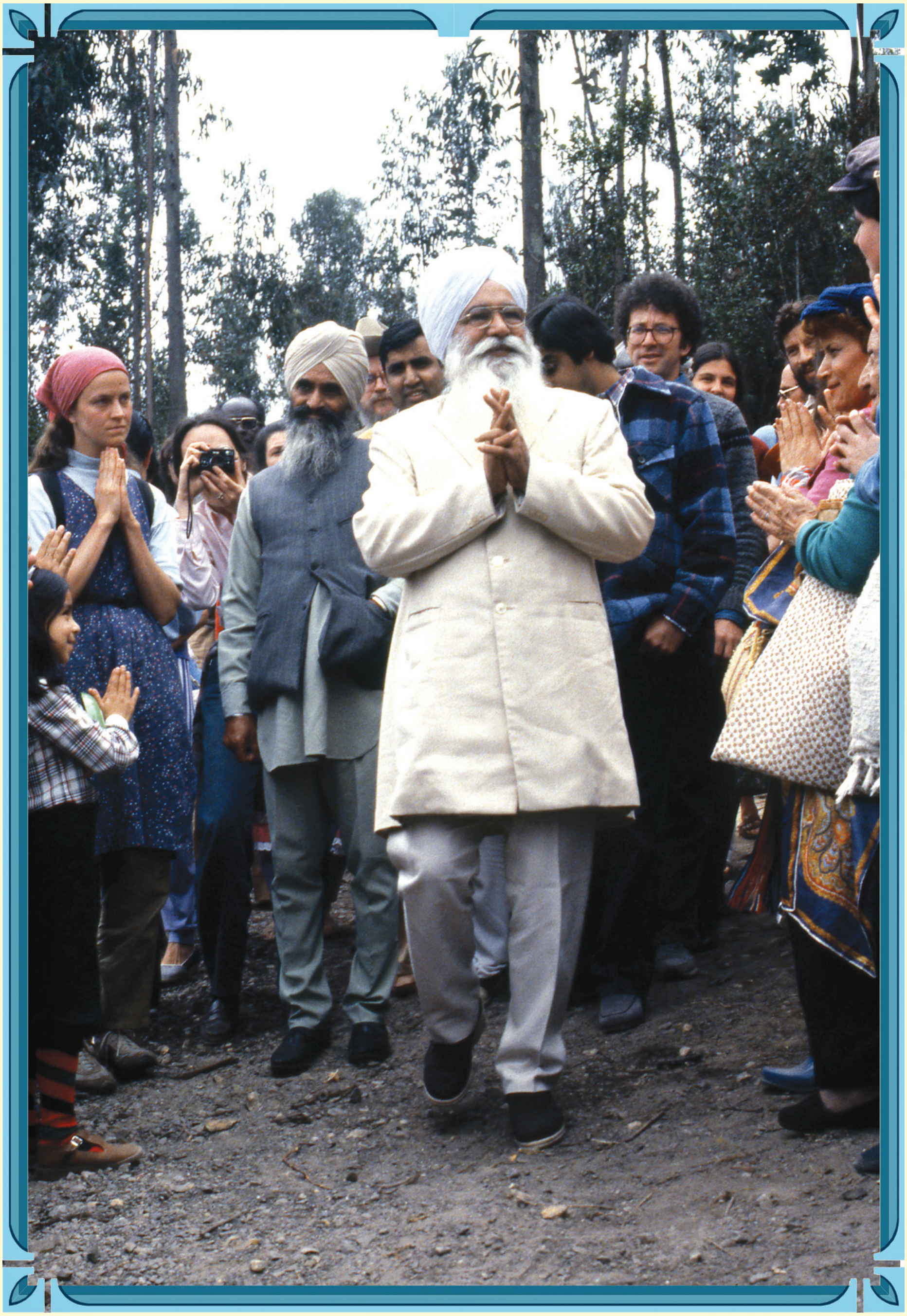

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

04 से 06 अक्टूबर 2019

01 से 03 नवम्बर 2019

29, 30 नवम्बर व 01 दिसम्बर 2019